INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA
ISSN 2454-8707 VOLUME-II,ISSUE-III, NOV-2016

# धर्म और राजनीति : एक विवेचन

**डॉ0 अरविन्द शुक्ला**
**सहायक प्रोफेसर–राजनति विज्ञान विभाग राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिन्दकी, फतेहपुर (उ0प्र0)**

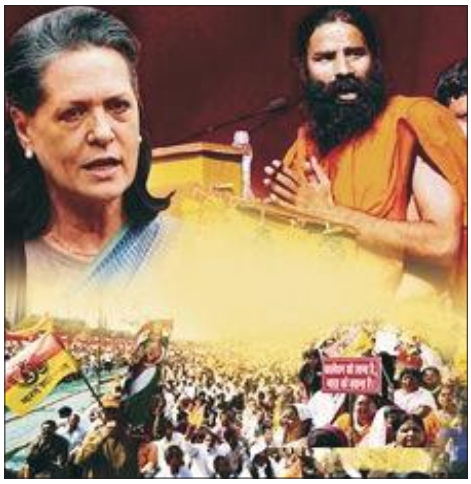

''धर्म अर्थात मनुष्य को ईश्वर से संबंधित करने वाली विधा या अलौकिक शक्ति मे विश्वास की परम्परा, वहीं 'राजनीति' वह गतिविधि है जो समाज के अर्न्तगत परस्पर विरोधी हितों के समाधान के लिए नीति एवं नियम बनाने की शक्ति या सत्ता का वैकल्पिक कार्यक्रम है। इस प्रकार धर्म जहाँ समाज में आध्यात्मिक विश्वास एवं नैतिकता की स्थापना में सहायक होता है। वहीं राजनीति राज्य एवं समाज के व्यापक विकास एवं समस्याओं के समाधान की भूमिका तैयार करती है।''

धर्म को राजनीति से अलग रखना चाहिए ऐसा कुछ आधुनिक लोगों के विचार है। धर्म यदि हमारे शांति, प्रेम, अहिंसा, सत्य आदि शाश्वत मूल्यों पर आधारित है तथा लोगों में स्नेह और भाईचारे के भाव को, प्रेरित करता है। तब तो उसे राजनीति से पृथक करने का विचार सुचिंतित प्रतीत नहीं होता है। हाँ धर्म यदि धर्मवाद और साम्प्रदायिकता फैलाकर राष्ट्रीय एकता को खतरा उत्पन्न कर रहा हो तब उसे निश्चय ही अलग रखना श्रेयकर होगा तथा इसी समाज और राष्ट्र का कल्याण निहित है।

प्राचीन भारतीय विचारधारा के अनुसार राज्य का निर्माण धर्म संस्थापन हेतु हुआ हैं कृष्ण की प्रतिज्ञा भी है कि युग युग में धर्म की संस्थापना के लिए जन्म लेता हूँ अर्थात ''धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे''। इसलिए राजा का परम कर्तव्य प्रजा को पुरूषार्थ धर्म, अर्थ काम की प्राप्ति द्वारा मोक्ष का मार्ग सुगम एवं सुलभ बनाना है। परन्तु यह तभी सम्भव है जब राजा स्वयं आचारवान हों। कामान्दक नीति में इसीलिए राजा के लिए इन्द्रिय विजय अनिवार्य बताया गया है। कामन्दक का मत था कि जो राजा अपने मन पर विजय प्राप्त करने में असमर्थ हो वह भला समुद्र पर्यन्त फैली हुई पृथ्वी पर विजय कैसे प्राप्त कर सकता है। राजा के धर्म परायण एवं चरित्रवान होने की आवश्यकता पर प्रायः सभी राजशास्त्र प्रणेताओं ने बल दिया है। प्रसिद्ध विद्वान डा0 ए0एस0 आल्तेकर के अनुसार प्राचीन भारत में राज्य निश्चय ही धर्म के प्रचार प्रसार में योगदान दिया करता था किन्तु किसी सम्प्रदाय अथवा धर्म विशेष का पक्षधर होकर नही बल्कि पवित्रता तथा धर्म की भावना का विकास करके, सद्गुण एवं नैतिक मूल्यों का विकास करके, सभी धर्मों एवं संस्थाओं की समुचिम सहायता करके, गरीब एवं असहायों के लिए निःशुल्क अस्पतालों एवं भोजनालयों की स्थापना करके और साहित्य तथा विज्ञान को विशेष राजकीय प्रश्रय प्रदान करके। इस आदर्श प्रवृत्ति में कालान्तर में विशेषतः ईसा पूर्व की चौथी सदी के बाद से क्रमशः परिवर्तन आया। वैदिक यज्ञों की गरिमा घटी और उनका दुरूपयोग हुआ। राजनीति का अध्ययन, अध्यापन एक विशेष विज्ञान के रूप में होने लगा। वेदों तथा उपनिषदों के दर्शन की तुलना में इसे क्रमशः अधिक महत्व प्राप्त होने लगा। व्यवहार नियम धर्म की तुलना में अधिक शक्तिशाली हो गये। इस संबंध में कौटिल्य ने सूत्रात्मक शैली में अत्यन्त सटीक बात कही है कि धर्म, व्यवहार चरित्र और राजशासन इन चारों में बलशाली होता है। ईसा की प्रथम सदी प्रारम्भ होते हिन्दू राजनीति ने स्वयं को ईश्वरवादी धर्म के बन्धन से लगभग मुक्त सा कर लिया था तब राजा किसी धर्म विशेष का अभिकर्ता न होकर सभी धर्मो की सहायता किया करता था। यद्यपि उस समय तक पुराणों की रचना प्रारम्भ हो चुकी थी।

गौतम बुद्ध ने जिस युग में ब्राम्हणवाद के विरूद्ध सामाजिक एवं वैचारिक विद्रोह किया था उसी युग में धर्म ही राजनीति का सिंहद्वार हुआ करता था। तब अशोक ने धर्म की रक्षा की और सर्वत्र धम्म का प्रसार हुआ। इसके बाद पुष्यमित्र शुंग ने भिक्षुक कमजोर शासक ब्रहद्रथ के रक्त से अपनी तलवार धोयी तथा वैदिक और सनातन धर्म की पुर्नस्थापना की। गुप्त एवं वर्धन युग में भी धर्म परस्पर संयुक्त रहा तथा हर्षवर्धन का त्रिवर्षीय मेलों का धार्मिक दान सर्वविदित है। कदाचित पश्चिम में पोप एवं राजशाही को यदि विमुक्त करके देखें जब मैकियावली को आगे आना पड़ा था।

जहाँ तक ऐतिहासिक एवं नैतिक दृष्टि से विचार करने पर धर्म को राजनीति से पृथक रखने का कोई आधार दिखाई नहीं देता। म्यूरहेड के अनुसार धर्म (नीतिशास्त्र) तथा राजनीतिशास्त्र में पाया जाने वाला सम्बन्ध स्पष्ट है। यह दोनों ही मानवीय आचरण तथा चरित्र से सम्बद्ध हैं। ये दोनों ही मानवीय कल्याण को लक्ष्य में रखकर राजनीति का आंकलन करते हैं। यह दोनों ही उसे एक ही समय में सामाजिक सम्बन्धों द्वारा परिचलित करने वाले तत्वों के रूप में देखते हैं। धर्म की राजनीति से पृथकता के कारण ही शायद आज राजनीति में अनैतिक तत्वों का बाहूल्य हो गया है। प्रेम और युद्ध में सब जायज है यह उक्ति आजकल राजनीति में भी लागू होने लगी है। इसमें अनैतिकता जैसी कोई वस्तु नहीं है और नैतिकता के विकृत नमूने को ही महान राजनीतिज्ञ माना जाता हैं। जिसकी कथनी करनी में अन्तर हो तथा जो साधनों की पवित्रता जैसे आदर्शवादी सिद्धान्तों से परिचित न हो। दुर्भाग्य से यदि परिचित भी हो तो उसका प्रयोग केवल भाषणों से भोली जनता को आकर्षित करने के लिए करता हो। इन्हीं निषेधात्मक मूल्यों के कारण आज राजनेताओं पर जनता का विश्वास दिनोंदिन कम होता जा रहा है और तो और फिर भी अक्सर यही राजनेता मूल्यों की बात करते नहीं थकते तो दूसरी तरफ धर्म का राजनीति पर प्रभाव भी गहराता जा रहा है। क्योंकि भारतीय राजनीति में तो धर्म

इस समय राजनीति में चरम पर अवस्थित है और यहाँ धर्म के नाम पर दल ही नहीं गठित हो गये बल्कि धर्म के आधार पर प्रत्याषियों का चुनाव में चयन, वोट की माँग, धार्मिक मुद्दों, बाबरी मस्जिद बनाम राम मन्दिर, गोधरा, बेस्ट बेकरी, धार्मिक नेताओं द्वारा वोटो का सौदा, 1980 के चुनाव में शाही इमाम की भूमिका, चुनाव पूर्व वी0पी0 सिंह अब्दुला बुखारी का चुनावी समन्वय, मिजोरम में कांग्रेस का ईसाई तुष्टीकरण, धार्मिक दबाव समूहों सिमी, विश्व हिन्दू परिषद की राजनैतिक भूमिका अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय तथा मुस्लिम पर्सलन लॉ बोर्ड का ज्यों का त्यों बना रहना, हिन्दुओं के विरोध के बावजूद भी हिन्दू कोडविल पास होना तथा मुस्लिम या अन्य धर्म का ऐसा कोई प्रयास न होना, धर्म के आधार पर पृथक राज्यों की मांग धर्मिक मंत्रिमण्डलीय प्रतिनिधित्व, धार्मिक तुष्टीकरण और कश्मीर विवाद–धारा 370, केरल की राजनीति में वामपंथी आवरण के पीछे धार्मिक यानि नैयर सर्विस सोसाइटी तथा साम्प्रदायिक श्री नारायण धर्म परिपालन युगम, पंजाब मे अकाली दल का प्रभुत्व, मुस्लिम आतंकवाद की जेहादी यानी धर्मयुद्ध की राजनीति जिससे इजरायल, भारत, अमरीका, रूस ही नहीं वरन पूरा गैर इस्लामी विश्व प्रभावित है तथा कुछ वर्शों पहले हुआ काँची पीठ शंकराचार्य की गिरफ्तारी का विवाद भी धर्म के राजनीति के प्रभाव को दर्शाता है क्योंकि इन धर्म गुरूओं को प्रतिस्थापित कहीं न कहीं आज राजनीति ही कर रही है तथा कश्मीर राज्य को समय समय पर दिए जाने वाला करोडों का अनुदान भी राजनीति पर धर्म के प्रभाव को ही सिद्ध करता है। भाायद तथी मार्क्स धर्म की इस विकृति से परिचित होते हुए अफीम का नशा एवं शोषण का यन्त्र मानता था और मकियावली, सेवानोराला, सुकरात, गैलीलियो आदि चिन्तकों के धर्म द्वारा शोषण एवं इटली के पतन को ध्यान में रखकर ही धर्म को राजनीति से पृथक करने की बात अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रिंस' में रखते हैं तथा अर्वाचीन प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया विशेषकर अँग्रेजी अखबार धर्म और राजनीति के जिस पक्ष को रख रहे हैं वह भी सोचनीय ही है। धर्म और राजनीति को मिलाया नही जा सकता नहीं जा सकता है, यह बात पहली बार सुप्रीम कोर्ट ने कही. कोर्ट ने कहा कि धर्म के नाम पर वोट नहीं मांगा जा सकता है और चुनावी लड़ाई के लिए धर्म का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए।

उच्चतम न्यायालय ने पूछा कि क्या कोई व्यक्ति सीमा पर मौतों का मुद्दा उठाकर एक विशेष दल के लिए वोट मांग सकता है. यह सवाल उन कई सवालों में शामिल था जो दो दशक पुराने 'हिन्दुत्व' संबंधी फैसले पर फिर से गौर करने के लिए सुनवाई के दौरान उठाया गया। सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया है कि धर्म और राजनीति को मिक्स नहीं किया जा सकता है। माननीय कोर्ट ने कहा कि धर्म के नाम पर वोट नहीं मांगा जा सकता है और चुनावी लड़ाई के लिए धर्म का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट में सात जजों की बेंच के सामने धर्म के नाम पर वोट मांगने से संबंधित मामले की सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस टीएस ठाकुर ने कहा कि इस मामले में संसद ने पिछले 20 साल में कुछ नहीं किया है।

अंततोगत्वा प्राचीन वैदिक धर्म और वर्तमान राजनीति का मेल अपनी पुरानी सफलताओं एवं त्रुटियों के बाद भी अपनी प्राचीन अस्मिता को पुर्नस्थापित अवश्य ही करेगा, बशर्ते हम मात्र अवसरवादी राजनीति के शिंकजे से धर्म की पवित्रता को बचाने में सफल हों जो महाकवि तुलसीदास जी, विवेकानन्द जी एवं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी आदि से हमें विरासत में मिला है। इस प्रकार जब धर्म और राजनीति साथ–साथ नहीं चलते, तब हमें भ्रष्ट राजनीतिज्ञ और कपटी धार्मिक नेता मिलते हैं। लोग सोचते हैं कि राजनीति और धर्म को अलग रखना चाहिए, क्योंकि कई धर्मो ने पूजा करने की स्वतंत्रता नहीं दी तथा सभी लोगों का एक समान ध्यान नहीं रखा परंतु इतिहास बताता है कि धर्म ने झगड़े पैदा किए हैं परंतु अधार्मिक समाज ने अस्त–व्यस्तता एवं भ्रष्टाचार भी फैलाया है।

## स्त्रोत – सन्दर्भ ग्रन्थ


1. धर्म का इतिहास – पी0वी0 काणे
2. तुलनात्मक राजीति एवं राजीतिक संस्थाएं – सी0बी0 गेना
3. तुलनात्मक शासन एवं राजनीति – डॉ0 जैन एवं फड़िया
4. प्राचीन भारत का इतिहास – ए0सी0 मित्तल
5. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास
6. हिन्दु किन शिप – के0एम0 कपाड़िया
7. पश्चात्य राजनैतिक चिंतन का इतिहास – जैन एवं फड़िया
8. आधुनिक भारतीय राजनैतिक चिन्तन – डा0 वी0पी0 वर्मा
9. Economic and Political Weekly
10. दैनिक जागरण – कानपुर
11. अमर उजाला – कानपुर
12. इण्डिया टुडे
13. आउटलुक
14. दि हिन्दू – दिल्ली
15. अखण्ड ज्योति – हरिद्वार
16. सहारा समय साप्ताहिक
17. Think Tank